ISSN No. 2394-9996

``भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यासों में नारी जीवन``

प्रा. काळे किर्ती सर्जेराव
राजीव गांधी महाविद्यालय, रायमोहा,
ता. शिरूर (का.) जि. बीड.

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में गगन मण्डल के तारे समान हिंदी कथा साहित्य के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार भैरवप्रसाद गुप्तजी है। उनके साहित्य में सामाजिक स्वर गूँजता है। हिंदी कथा साहित्य को विशेषकर उपन्यास को विकसित करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। उनके कई सामाजिक, यथार्थवादी और आँचलिक उपन्यास हैं। आपने नारी पात्रोंद्वारा उपन्यास साहित्य के माध्यम से नारी पर होनेवाले अन्याय का विरोध किया हैं।

स्वातंत्र्यपूर्व ओर स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास साहित्य में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। समूचे भारत के सामाजिक, आर्थिक, राजकीय और सांस्कृतिक परिदृश्य को अपने साहित्य में लाने का अदभुत कौशल्य भैरवजी की लेखनी में है। भैरवजी साहित्य को बौद्धिक तथा मनोरंजन का साधन न मानकर समाज को बदलने का हाथियार मानते है। साथ ही वे उसे समाजवादी मूल्यों की प्रतिष्ठा बढ़ानेवाले तथा वर्ग चेतना को अभिव्यक्त करने का जरिया भी मानते है। भैरवप्रसाद गुप्त को नारीके प्रति आदरभाव है.. इसी कारण उन्होंने अपने साहित्य में नारी के विविध पहलूओं का यथार्थ चित्रण किया है। `नारी` साहित्यकारों की लेखनी से अनेक कृतियों में अंकित हो रही है। टामसमूर के मतानुसार, ``स्त्री रात का तारा है और प्रभात का हीरा है। वह तो ओस का कण है जिससे काँटो का मुँह भी हीरों से भर जाता है।``[1] जिस तरह नारी के बिना पुरूष में तथा समाज में पूर्णता नहीं आ पाती, उसी प्रकार साहित्य भी नारी चित्रण के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। भारतीय परिवेश में नारी जीवन का चित्रण उपन्यासकारों के उपन्यास साहित्य में हुआ है।

भैरवप्रसाद गुप्त के कथात्मक साहित्य में हमारे समाज के अनेक पक्षों, समस्याओं ओर स्थितियों का चित्रण मिलता है, फिर भी हमारी राय में यदि उनका ध्यान किसी एक पक्ष ने सबसे अधिक खीचा है, तो वह है नारी शोषण तथा समाज का शोषित वर्ग। कथाकार के रूप में गुप्त जी का मूल्यांकन करते हुए डॉ. राजेंद्र मोहन अग्रवाल ने लिखा है, ``उन्होंने उपन्यासों की रचना की है और

कहानियों की भी दोनों में ही उनकी समाजवादी दृष्टि रही है। ये सामान्य जन की वर्ग-चेतना से संबंद्ध रहे हैं। मार्क्सवादी होने के कारण उनके उपन्यासों की कथावस्तु सामान्यतः कृषकों, श्रमिकों आदि सर्वहारा वर्ग को लेकर चलती है। शोषित का वर्णन करने के लिए उन्होंने शोध के शोषण का भी विवरण किया है और शोषकों के विविध रूपों में अपनाये जाने वाले हथकण्डों का भी जीवंत चित्रण मिलता है। किंतु यहाँ यह दृष्टव्य है कि उनकी यह दृष्टि मात्र अध्ययन प्रस्तुत ही न होकर अनुभूति के स्तर तक गहराई में बैठी हुई है। इसीलिए कथानकों के प्रचारात्मकता की अपेक्षा वास्तविकता का पुट है।`[2] गुप्तजी ने यथार्थवाद का बड़ा साफ-सुथरा चित्रण प्रस्तुत किया है। उनका यथार्थ समाज का यथार्थ है।

हिंदी उपन्यास साहित्य को समृद्ध करने में भैरवप्रसाद गुप्त का अपना अलग स्थान है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवनके हर एक पहलू का`बडी सफलता से चित्रित करने का प्रयास किया है। नारी जीवन के विविध रूप, नारी की विविध समस्याओं का चित्रण अपने साहित्य में किया है। नारी के जीवन में आनेवाली कठिनाइओं का सामना निडर होकर अपने जीवन में करती है। इसका यथार्थ वर्णन वे अपने साहित्य के माध्यम से करते है। वे समाज से दूर रहकर केवल कल्पना में ही नहीं जीते बल्कि यथार्थ की ठोस जमीन पर आकर समाज में व्याप्त विविध विषयों के माध्यम से मानवीय भावनाओं को पूर्णता से अभिव्यक्त करते है।

भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यास साहित्य में चित्रित नारी जीवन की पीडा, शोषण, संघर्ष का वर्णन प्रस्तुत किया गया है। भैरवप्रसाद गुप्त ने उपन्यास साहित्य के माध्यम से अपने स्त्री पात्रोंद्वारा स्त्रीपर होनेवाले अन्याय का विरोध किया हैं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नारी जीवन के हर एक पहलु को बड़ी सफलता से चित्रित किया है। समाज व्यवस्था का निर्माण पुरूषों द्वारा होने के कारण नारी की भूमिका दुय्यम रही है। यह नारी का दुय्यम स्थान गुप्त जी बदलना चाहते है। गुप्तजी के उपन्यास की नारी अपने अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष करती है। `शोले` उपन्यास की नायिका शोभी समाज में प्रचलित अनिष्ठ रूढी-परंपरा का विरोध करती है। उपन्यास में उसके संघर्ष की कथा है। `गंगामैया` में नायिका भाभी के मानसिक पीडा का दर्दनाक चित्रण गुप्तजी ने किया है। `सत्तीमैया का चौरा` यह गुप्तजी का सबसे अधिक लोकप्रिय उपन्यास रहा है। इसमें नारी जीवन के हर एक पहलू का बडी रोचकता से वर्णन किया गया है। नायिका `महशर` जो अपने असित्व के लिए संघर्ष करती है। इसका यथार्थ चित्रण किया गया है। उपन्यास में यथार्थ चित्रण गुप्तजी के उपन्यास की खास विशेषता है।

मशाल, आशा, रंभा, कालिंदी, आग और आंसू, एक जीनियस की प्रेमकथा, भाग्यदेवता, छोटीसी शुरूआत आदि उपन्यासों में भी गुप्तजी ने नारी जीवन के विविध पहलुपर प्रकाश डाला है। `आशा` उपन्यास की नायिका जानकीदेवी। जो एक वेश्या है। उसके जीवन में आनेवाली समस्याओं का चित्रण उपन्यास में किया है। वह किस प्रकार पुरूष द्वारा शोषित बन जाती है। इसका मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। गुप्तजी के प्रत्येक उपन्यास के नारीपात्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है, अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है, नारी के प्रति गलत सामाजिक रूढ़ीयों का विरोध करती है।

भैरवप्रसाद गुप्तजी के उपन्यास साहित्य में नारी जीवन की समस्याओं पर विचार किया गया है। गुप्तजी ने चौदाह उपन्यास लिखे है। इन उपन्यासों में उन्होंने प्रेमचंद की यथार्थवादी परम्परा को आगे बढ़ाने का महत्वपूर्ण काम किया है। उन्होंने उपन्यास में नारी जीवन और नारी के संबंधित आनेवाली समस्याओं का चित्रण किया है। `शोले` उनका पहला उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने अनिष्ठ रूढी परंपरा को लेकर सवाल खडे किये है। नारी पुरूषों की नजर में कितनी महत्वपूर्ण है, नारी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर न हो तो क्या हाल होता हैं, इसका चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया है। पुरूषों के कारण नारी मन पर, नारी जीवन पर, होने वाले आघातों का चित्रण गुप्तजी ने अपने उपन्यासों में विविध समस्याओं के माध्यम से अंकित किया है।

गुप्तजी के प्रत्येक उपन्यास में नारी समस्याओं को चित्रित किया गया है और वह सुलझाने का भी प्रयास उपन्यास के पात्रों द्वारा किया गया है। वे गंगामैया उपन्यास में विधवा पुनर्विवाह द्वारा प्रचीन परम्परा को तोडकर नये विचारों की प्रतिष्ठापना करते है, आग और आंसू में पति-पत्नी के बीच अन्य तीसरे का प्रवेश से दाम्पत्य जीवन में दरार आने लगती है, इस का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। आशा, रंभा, कालिन्दी उपन्यासों में वेश्याओं के जीवन की समस्या को उजागर किया है। कोई स्त्री खुद वेश्या नहीं बनती बल्कि परिस्थिति उसे मजबूर करती है यह सकीना के माध्यम से मशाल उपन्यास में गुप्तजी ने चित्रित किया है। पारिवारिक स्थिति कमजोर होने से सत्ती मैया का चौरा की महशर, आशा उपन्यास की आशा, अंतिम अध्याय की शकुन्तला, अक्षरों के आगे मास्टरजी के सीतादेवी को अनेक समस्याओं का सामना करना ही पडता है। इन सभी समस्याओं के बावजूद गुप्तजी के उपन्यासों की नारियाँ परिस्थिति से लडकर अपने जीवन में आगे बढ़ती है। संघर्ष से वह कभी घबराती नहीं। निडर होकर इन समस्याओं का मुकाबला करते हुए अपने जीवन में आगे बढती है।

भैरवप्रसाद गुप्तजी ने नारी जीवन-वास्तव को व्यक्त करने के लिए जीवन वास्तव से संबंधित विषयों का चयन किया है। जिसकी प्रस्तुति में आक्रोश, विद्रोह, नकार, आत्मभान, तटस्थता, स्पष्टता, प्रामाणिकता, सरलता, प्राजलता आदि विषयगत विशेषताओं का समावेश है। समाज में नारी पर होने वाले अन्याय, अत्याचार शोषण का विरोध करती हुई गुप्तजी के उपन्यास साहित्य में दिखाई देती है। जनता की तथा नारी की शोषण से मुक्ती गुप्तजी के उपन्यासों के प्रस्तुत विषयों के महत्वपूर्ण अंग है। युग-युगों से नारी शोषण कि परंपरा चलती आ रही है, इसका तीव्र विरोध गुप्तजीने उपन्यास के नारी पात्रोंद्वारा किया है। वे उसे बलि का बकरा बनने से साफ इन्कार करते है। वे नारी को समाज में प्रतिष्ठा के लिए अधिकार प्राप्त करने लिए संघर्ष का मार्ग अपनाते है।

गुप्तजी के अपन्यास की नारियाँ परंपरा एवं रूढ़ियों को तोडती, अपने स्वातंत्र्य के लिए जूझती, कभी सफल तो कभी असफल होती, नवीन मूल्यों का ग्रहण करने में सचेष्ट नारी का जो रूप उपन्यासों में उभरकर आया है, वह वास्तव में अभिनव ही है। नारी दुर्दशा का यथार्थ चित्रण गुप्तजी के उपन्यासों में हुआ है। इस दृष्टि को लेकर चलनेवाले उपन्यासों में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं को उभारने का कार्य प्रमुख रूप से किया है। उन्होंने इन समस्याओं का समाधान देने या इन समस्याओं के संबंध में अपने व्यक्तिगत मान्यताओं को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है।नारी की किसी दशा को उभारकर उसके प्रति पाठकों की संवेदना जगाने में गुप्तजी कामयाब हुई है। इस दृष्टिकोन से लिखे गये उपन्यासों में कहीं-कहीं गुप्तजी ने इतना सजीव एवं मार्मिक वर्णन किया है कि पाठक यह सोचने को विवश हो जाता है कि नारी के साथ यह जो कुछ हो रहा है, ऐसा नहीं होना चाहिए। इस समस्याओं का समाधान होना चाहिए। `मशाल` उपन्यास को पढने के उपरान्त वेश्या सकीना की बेबस मजबूरी इतनी द्रवित करती है कि लगता है, ऐसा नहीं होना चाहिए। इतना ही नहीं वेश्याओं के प्रति मन में क्रोध नहीं आता बल्कि दया एवं करूणा की भावना ही उपजती है।

भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यासों के उद्देश्य बिल्कुल साफ होते है। यह उपन्यास पाठक का केवल मनोरंजन ही नही करते बल्कि उन्हें उद्वेलित कर चिंतन - मनन के लिए बाध्य भी करते है।

संदर्भ सूची -

1) कुल ललना - गद्य भाग - रामकुमार वर्मा - पृ. 148.
2) भैरवप्रसाद गुप्त व्यक्तित्व और कृतित्व - राजंद मोहन अग्रवाल -पृ. 418.
3) भैरवप्रसाद गुप्त व्यक्तित्व और कृतित्व - राजेंद्र मोहन अग्रवाल.
4) शोले - भैरवप्रसाद गुप्त
5) मशाल - भैरवप्रसाद गुप्त
6) गंगा मैया - भैरवप्रसाद गुप्त
7) सत्ती मैया का चौरा - भैरवप्रसाद गुप्त
8) समाजवादी उपन्यासकार भैरवप्रसाद गुप्त - डॉ. सुनंदा पालकर